Lecture - (12)

Topic —
(4) Carvaka: Epistemology, ontology and Ethics.

Sunita Kumari
Subject:→ Philosophy (Sub)
B.A Part - I

Ans:→ भारतीय दर्शन में चार्वाक ने अपने इस नैतिक कार्य करने में सफलता प्रकट किया चार्वाक का कथन इस प्रकार था जितना धन जानी मनुष्य कमाता है सब खाने में सुखी जीन्दगी व्यतीत करने खर्च करो कल के लिए धन जमा नहीं करो खुल कर खाओ वस्त्र पहने और अपने नैतिक कर्तव्य समझो चार्वाक ने कहा धन जमा करेगा तो चोर चोरी कर सकता है शरिर पर खर्च करो जिओ मस्त मतलब सुख से जिओ कष्ट नहीं होगी।

यही सब (Charvaka epistemology, ontology and Ethics) में यह दर्शाता है कि जितना दिन जिओ सुख से जिन्दगी व्यतित करो यानी आत्मा को कष्ट नही दो जो इच्छा न हो वही खाओ कल की —

P.T.O.

आशा नहीं ~~कर~~ करो कल के लिए धन जमा नहीं करो यही सब अपने भाषा में चार्वाक ने व्यक्ति को अपने शब्दों में सम्बोधित करता था।

इस संसार में मया लोग यहां मोह, के के कारण धन शरीर को कष्ट देकर धन जमा नहीं करो जितना धन अर्जित करो वह सब खर्च करो खाने में कपड़ा में नैतिक जीवन जीने में खर्च करो यह सब बातों को चार्वाक ने अपने शब्दों में बतलाया है। नैतिक कर्यो में खर्च आर्थिक बुद्धि का इस्तेमाल करो लोग थोड़ी संतुष्ट भावना से नैतिक जीवन व्यतीत व्यक्तित्व करो, दुःख शरीर को नहीं दो अपने आपमें सम्भल कर आगे की ओर बढ़ो सुखमय जिन्दगी बिताओ यह सब बातों पर चार्वाक बुद्ध बल देता था

चार्वाक सब दर्शनिक से बिल्कुल अलग विचार के दर्शनिक थे चार्वाक का कथन बिल्कुल अलग था मनुष्य को हर समय

P.T.O

अपने भावना इस प्रकार व्यक्ति करता था। नैतिक दृष्टि से चार्वाक का अपना सोच था अपनी समझदारी से लोगों को इस प्रकार सम्बोधित करते थे

चार्वाक ने कहा हम जैसे काम करेंगे वैसा ही फल मिलेगा ~~व्यक्ति~~ अथवा लोग, कोई का मन बुरा सोच नहीं रखना चाहिए ताकि लोगों को कष्ट मिले। चार्वाक नैतिक दर्शन के नैतिक भावना से लोगों को सम्बोधित किया चार्वाक का मतलब ~~चार~~ चार वाक या चर्व धातु से निकला यानी चार वाक चार्वाक का कथन अलग ढंग से दार्शनिक दृष्टि से अपना लक्ष्य था चार्वाक का विचार सब दार्शनिक से बिल्कुल अलग था

चार्वाक ने (carvaka of Philosophy) का जितना दिन जिए दिन जिओ सुख से जिओ कष्ट मत झेलो शरीर को कष्ट मत दो धन जमा कर मत रखो यही सब बातों पर चार्वाक विशेष व्याख्यान करता था

D.N.D.

Date

Lecture - (11)

Topic -

Sunita Kumari
Subject - philosophy (H)
B.A Part - I Paper - I

(5) Meaning of Nastika

Ans :- भारतीय दर्शन मे (Nastika) नासतिक के विचार कुछ इस प्रकार देखने को मिलता है। नासतिक यानी नकारात्म भावना प्रकट करना ही नासतिक कहलाता है। यानी बिना निष्काम भावना से किया गया कर्म नासतिक कहलाता है। अपनी भावना को किस प्रकार प्रकट बारीकिंग से करते है। अपना कुछ न कुछ लक्ष्य लेकर ही मनुष्य अपना कार्यो को शुरु करता है। जब वे वह कार्यो में सफलता मिल जाती है तब सकाम कर्म कहा जाता है। जिस कार्य को करने से असफलता मिलती ही है। वह कर्म करने मे तब इसमे ईश्वर की प्रतिती महसुस होती है। जैसे :- ईश्वर मे विश्वास करना भारतीय दर्शन मे विस्तार पूर्वक स्पस्ट करता है। (Indian philosophy of Nastika) इस दर्शन मे ईश्वर को नही मानता है। इस प्रकार दोनो को,

P.T.O.

Date

(7)

भिन्न ढंग से बतलाया गया है।
नास्तिक (Nastika) दर्शन में ईश्वर को नहीं मानता है। ईश्वर में नहीं विश्वास रखता है। नास्तिकवादीओं का कहना है। व्यक्ति के किये गये कर्म यानी कार्य पर निर्भरता ही इस ~~विरू~~ आधार पर खण्डन करना पड़ता है।

नास्तिक दर्शन में अनेक तरह के विचार दार्शनिकों व्यक्त किया है। इसी प्रकार इस संसार की उत्पत्ति अपने आप से हो जाता है। नास्तिक दर्शन में कहा ईश्वर ही नहीं अथवा, संचार भी हो जाता है।

जिस प्रकार मनुष्य जन्म लेता है और वह आगे बढ़ते रहता है। उसी प्रकार बच्चा जब जवान होता है और जवान से वह बूढ़ा होता है। उसी प्रकार अपने आपमें इस संसार में वही नियम देखने को मिलता है। और नास्तिक के दार्शनि नितसे (Nitse) ~~सोपहार~~ सोपेन हावर (Sopenhaver) ने दार्शनिक ढंग से इस समस्या से निपटने को

P.T.O.

चेष्टा किया है। नियम पूर्वक चलना चाहिए यही सब शोपेनहार ने कहा है।

इस संसार अकेलों है। इस विषय में यही सब बातों की विस्तार पूर्वक आलोचना हुई है। :- (Meaning of Nastika) इस संसार में अपने आप में उत्पत्ति हुई है। इस में दूसरा कोई नहीं है। यह सब प्रकृति की देन है। नियम के तहत चलते रहता है। और जड़ जगत प्रकृति की देन है और यही सब निष्कर्ष निकलता भावना देखने को मिलती है। नास्तिक नास्तिकवाद है।

जड़ जगत ही मुख्य कारण बतलाया गया है।

भारतीय दर्शन में यही सब संक्षिप्त हो या विस्तार सब एक ही दृष्टि से अनुसारित किया गया है।

इस दर्शन में यही सब देखने को मिलती है। यानी ईश्वर पर विश्वास नहीं रखता है। नास्तिक मानता अपने आप प्रकृति की देन है। पृथ्वी चलती है। अंधविश्वास से परे रहना पड़ता है। E.N.D.